भजन

दो स्वरूपों में सतगुरू आन मिले
इक रामरतन दूजे जागनी रतन

1–इक ने कसनी कर कष्ट सहे, दूजे ने सेवा से चरण ग्रहे
कई मोड़ दुखों के पार किए

2–इक जागनी का सूरज बन आये, दूजे ने उजाले फैलाये
सबके भव ताप हरन वाले

3–इक ने हमको है इश्क दिया, दूजे ने ईलम ईमान दिया
ये आत्म के अनमोल रतन

4–इक अर्श की कुंजी ले आए, दूजे ने खजाने लुटा दिए
सतगुरू के संग करतार मिले

5–जगाया इक ने गुझ इशारों से,दूजे ने वाणी की गुंजारों से
ब्रह्मसृष्टि को सरताज मिले

6–दो रूप हैं लीला इक होई, पहचान सका विरला कोई
मेहरों के सागर भर लाये